Arri kiyoon banvri bhai va chaliya ke liyo Lyrics in Hindi and English

Arri kiyoon banvri bhai va chaliya ke liyo Lyrics in Hindi

ऐरी क्यों बावंरी भयी,वा छलिया के लियो

तुं सुकुमारी कठींन, पथं प्रेम को
नाहीं तेरे योग, अरी आली नाहीं तेरे योग अरी
बहना नाहीं तेरे योग
ऐरी क्यों बावंरी भयी, वा छलिया के लियो

वाहा छलिया सों, दुर ही रहियो
काहे लगायो ये रोग, अरी अली नाहीं तेरे योग
अरी बहना नाहीं तेरे योग
ऐरी क्यों बावंरी भयी, वा छलिया के लियो

Arri kiyoon banvri bhai va chaliya ke liyo Lyrics in English

Airi kyon bawari bhayi, wa chhaliya ke liyo

Tun sukumari kathin, path prem ko
Nahin tere yog, ari aali nahin tere yog
Ari behna nahin tere yog
Airi kyon bawari bhayi, wa chhaliya ke liyo

Waha chhaliya son, dur hi rahiyo
Kahe lagayo ye rog, ari aali nahin tere yog
Ari behna nahin tere yog
Airi kyon bawari bhayi, wa chhaliya ke liyo

About Arri kiyoon banvri bhai va chaliya ke liyo Bhajan in English

“Arri Kyon Banvri Bhai Va Chhaliya Ke Liyo” is a devotional bhajan that

speaks to the deep emotional connection between the devotee and **Lord Krishna**, often portrayed as a playful and loving figure, known for his mischief and charm. The bhajan is filled with themes of longing, devotion, and the powerful, magnetic presence of Krishna, which captivates the hearts of his devotees.

- **Krishna's Charm and Mysticism:** The opening line, **"Arri Kyon Banvri Bhai Va Chhaliya Ke Liyo"**, expresses the devotee's emotional state, feeling as though she is lost in the charm of Krishna. The word "Banvri" reflects the devotee's state of confusion or affection, overwhelmed by Krishna's enchanting nature. "Chhaliya Ke Liyo" suggests Krishna's playful nature as the one who steals hearts and captivates the minds of those around him, particularly his beloved devotees.
- **The Playful Nature of Krishna:** The bhajan speaks to Krishna's mischief and how he draws his devotees to him with his playful actions. The phrase **"Chhaliya"** refers to Krishna as the charming figure who plays tricks on his devotees, and yet, his charm is so powerful that they cannot resist him. The bhajan conveys that Krishna's playful nature, although mischievous, is endearing and holds a divine purpose in leading his devotees closer to love and devotion.
- **Devotee's Longing for Krishna:** The bhajan also conveys the devotee's deep longing for Krishna, as she finds herself enamored by his charm. This longing is reflective of the emotional connection that Krishna shares with his devotees, a bond that leads to spiritual fulfillment and ultimate divine union. The devotee desires to be with Krishna, to experience the divine love he offers, and is captivated by his divine presence.
- **The Devotee's Inner Conflict:** The bhajan expresses a subtle inner conflict of the devotee who is aware of Krishna's divine mischief but cannot escape the pull of his charm. It portrays the devotee's struggle between the earthly realm and the divine world Krishna offers, where devotion and love for Krishna guide her through this inner turmoil.
- **A Call for Divine Blessings:** As with many devotional bhajans, this one serves as a call for Krishna's blessings and the devotee's submission to Krishna's divine will. It is a reminder of how love for Krishna transcends all earthly attachments and takes the devotee on

a spiritual journey toward grace, peace, and fulfillment.

Overall, **“Arri Kyon Banvri Bhai Va Chhaliya Ke Liyo”** is a soulful bhajan that reflects the magnetic and divine allure of **Lord Krishna**, portraying his playful yet profound influence over the hearts of his devotees. It showcases the emotional connection, spiritual devotion, and longing of the devotee, who surrenders to Krishna’s charm and divine love. The bhajan reminds the listener of Krishna’s power to captivate the heart and lead the soul toward divine union.

About Arri kiyoon banvri bhai va chaliya ke liyo Bhajan in Hindi

“अरी क्यों बनवरी भई वा छालिया के लियो” भजन के बारे में

“अरी क्यों बनवरी भई वा छालिया के लियो” एक अत्यंत भावपूर्ण और भक्ति से भरा भजन है जो **भगवान श्री कृष्ण** की मोहक, चंचल और लुभावनी छवि को दर्शाता है। इस भजन में भगवान कृष्ण के प्रति गहरी श्रद्धा, प्रेम और भक्ति का अहसास किया जाता है, जहां भक्त उनकी शरारतों और सुंदरता के आकर्षण से अभिभूत होते हैं। भजन में कृष्ण की मस्ती, प्रेम और भक्तों के प्रति उनकी असीम आकर्षण को व्यक्त किया गया है।

- **कृष्ण का आकर्षक व्यक्तित्व :** भजन की शुरुआत में “अरी क्यों बनवरी भई वा छालिया के लियो” पंक्ति में भक्त यह प्रश्न करती है कि कृष्ण के मोहक व्यक्तित्व ने उसे इतना आकर्षित क्यों किया है। “बनवरी” का अर्थ है वह स्त्री जो कृष्ण के प्रेम में पागल हो जाती है, और “छालिया” कृष्ण की शरारती छवि का प्रतीक है, जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। कृष्ण का नटखट स्वभाव और उनकी शरारतें भक्तों के दिलों को लुभाती हैं।
- **कृष्ण की लीलाओं का आकर्षण :** इस भजन में कृष्ण की मासूमियत और उनकी शरारतों का जिक्र किया गया है, जिनकी वजह से भक्त अपने आप को उनसे जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। कृष्ण का यह आकर्षण एक दिव्य शक्ति है, जो भक्तों को उनकी तरफ खींच लाती है। यह पंक्ति इस बात का संकेत है कि कृष्ण की लीला ही भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करती है।
- **भक्ति और समर्पण का अनुभव :** भजन में यह भाव व्यक्त किया गया है कि भक्त कृष्ण के प्रति अपनी पूरी श्रद्धा और समर्पण को महसूस करता है। “अरी क्यों बनवरी भई” पंक्ति में भक्त कृष्ण के प्रति अपनी दीवानगी और प्रेम को व्यक्त करता है। वह कृष्ण के नाम और उनके दर्शन में अपना सुख और शांति पाता है।

- **कृष्ण के प्रति गहरी ललक और प्रेम :** भजन में कृष्ण के प्रति भक्त की गहरी ललक और प्रेम को दर्शाया गया है। कृष्ण के नाम का जाप और उनके रूप की कल्पना भक्त के हृदय में प्रेम की गहरी भावना जगाती है। कृष्ण के बिना सब कुछ अधूरा लगता है और उनके दर्शन से ही जीवन में पूर्णता का अनुभव होता है।
- **कृष्ण के साथ दिव्य संबंध :** भजन का यह संदेश है कि भक्त का कृष्ण के साथ एक दिव्य और अडिग संबंध है। कृष्ण के प्रेम में भक्त पूरी तरह से समर्पित हो जाता है और उसकी भक्ति में खो जाता है। यह भजन कृष्ण के साथ उस अद्‌वितीय और शाश्वत संबंध को व्यक्त करता है, जिसे कोई शब्द नहीं व्यक्त कर सकता।

कुल मिलाकर, **"अरी क्यों बनवरी भई वा छालिया के लियो"** भजन भगवान श्री कृष्ण के चंचल, मोहक और आकर्षक रूप का प्रतीक है। यह भजन भक्तों को कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण में खो जाने की प्रेरणा देता है। साथ ही, यह संदेश देता है कि कृष्ण के साथ एक गहरा और शुद्ध संबंध बनाकर जीवन में दिव्य शांति, प्रेम और आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।